Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

जयशंकर प्रसाद की आत्माभिव्यक्तिपरक कविताएँ और निर्वैयक्तिक चेतना

डॉ .अर्चना त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर
जीसस एंड मेरी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
मो.नं. – 9891021839
jnuarchanatripathi@gmail.com

सारांश:

जयशंकर प्रसाद के काव्य का विकास क्रमिक ढंग से हुआ है। 'चित्राधार' और 'कानन-कुसुम' की अधिकांश कविताएँ प्रकृति चित्रण पर आधारित है जबकि 'झरना' संग्रह तक आते-आते कवि के वैयक्तिक प्रेम और विरह की एक अविरल धारा प्रवाहित होती है, जो 'आँसू' में ढलकर 'लहर' में समाहित हो जाती है। झरना, आँसू और 'लहर' में ही उनकी आत्माभिव्यक्ति अधिक सघन और मुखर है। झरना' से पूर्व प्रसाद का काव्य वस्तुनिष्ठ प्रतीत होता है। यहाँ पहली बार ये आत्मनिष्ठता और निजता के प्रकोष्ठ में बैठकर नई भावधारा में अवगाहन करते हैं।

बीज शब्द: *जयशंकर प्रसाद, व्यक्ति, प्रेम, आत्मनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ*

शोध विस्तार

छायावाद की कविता में व्यक्ति-स्वातंत्र्य का स्वर मुखर हुआ है। यहाँ 'स्व' की अभिव्यक्ति को महत्त्व दिया गया। छायावादी आत्माभिव्यक्ति में व्यक्तिगत प्रेम कथा ही प्रधान है। लगभग सभी छायावादियों ने किसी न किसी रूप में अपने प्रेम की गाथा गयी है। प्रसाद की प्रेम व्यंजना यथार्थ भावभूमि का स्पर्श करती प्रतीत होती है। उनका प्रेम 'स्व' से प्रारंभ होकर 'पर' की सीमा तक व्याप्त है। वास्तव में उदात्त प्रेम की कसौटी भी यही है। प्रेम का प्रारंभ आत्मनिष्ठ होता है और अन्त वस्तुनिष्ठ। प्रेम की उसी अवस्था को शास्त्रीय शब्दावली में आत्माभिव्यक्ति की निर्वैयक्तिक चेतना की संज्ञा दी गई है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य का विकास क्रमिक ढंग से हुआ है। 'चित्राधार' और 'कानन-कुसुम' की अधिकांश कविताएँ प्रकृति चित्रण पर आधारित है जबकि 'झरना' संग्रह तक आते-आते कवि के वैयक्तिक प्रेम और विरह की एक अविरल धारा प्रवाहित होती है, जो 'आँसू' में ढलकर 'लहर' में समाहित हो जाती है। झरना, आँसू और 'लहर' में ही उनकी आत्माभिव्यक्ति अधिक सघन और मुखर है।

'झरना' से पूर्व प्रसाद का काव्य वस्तुनिष्ठ प्रतीत होता है। यहाँ पहली बार ये आत्मनिष्ठता और निजता के प्रकोष्ठ में बैठकर नई भावधारा में अवगाहन करते हैं। इसी संगह में छायावाद का रंग रहस्य

और कल्पना प्रवणता लाक्षणिक शैली में व्यक्त हुआ है। आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने 'झरना' को छायावाद की प्रयोगशाला का प्रथम अविष्कार माना है।[i] प्रसाद की प्रेमपरक रचनाएँ 'झरना' में ही रूपाकार ग्रहण करती दिखाई देती हैं। प्रसाद के यहाँ प्रेम केवल स्त्री-पुरुष के इश्क की दास्तान नहीं है। उसमें प्रसाद की समग्र काव्य चेतना के अन्तःसूत्र निहित हैं। उनका प्रेम व्यष्टि से समष्टि तक प्रसारित है। उसमें प्रकृति, मानव, और अनन्त सत्ता तक समाहित है। उस प्रेम का परिचय झरना के 'परिचय' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियों में मिल जाता है-

''उषा का प्राची में आभास,

सरोरुह का सर बीच विकास।''[ii]

'प्रेम का मेरा तेरा छंद' सृजन के प्रारंभ में ही फूट पड़ा है। वास्तव में झरना अपने प्रतीकार्थ में प्रेम का ही झरना है जिसका दायित्व और उद्देश्य है-

''तापमय जीवन शीतल करना

सत्य यह तेरी सुधराई में

प्रेम की पवित्र परछाई में।''[iii]

'झरना' को अभ्यास काल की रचनाओं का संग्रह कहा जाता है। उसे काव्य अविष्कार की प्रथम प्रयोगशाला कहा गया है, लेकिन, उस प्रथम प्रयोगशाला में कवि का भावी रूप स्पष्ट झांकता दिखाई पड़ता है। कवि को प्रेम और सौन्दर्य के मेल से मस्ती पूर्वक जिस लक्ष्य को हासिल करना है उसका अभियान उसके प्रथम चरण की गति में ही परिलक्षित हो जाता है। चिन्ता की रेखाएँ विविध चित्रों का आरेखन करने लगती हैं। कवि को झरना में ही आँसू का आभास मिल जाता है। प्रेम के आलम्बन को संबोधित करते हुए कवि कहता है-

''मेरे मरुमय जीवन के हे सुधा-स्रोत! दिखला जाओ।

अपनी आँखों के आँसू से इसको भी नहला जाओ।''[iv]

प्रारंभ में कवि का वैयक्तिक प्रेम निवैयक्तिक होकर अपनी पूरी-पवित्रता के साथ विश्व वैभव बन गया है-

''दृष्टि पथ में सृष्टि है आलोकमय

विश्व वैभव से भरा यह धन्य है।''[v]

स्थूल प्रेम कायिक होता है। वह पवित्रता की राह पर चलता हुआ क्रमशः मानसिक, भावनात्मक और आत्मगत होता चला जाता है। इसीलिए, प्रारंभ में आलम्बन के रूप-चित्र भी शब्दों में ढलते दिखाई पड़ते हैं। झरना की 'रूप' शीर्षक कविता को पढ़ने पर यह पता चलता है कि कवि श्रृंगार के रीतिकालीन संस्कारों से कविता को मुक्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं-

''ये बंकिम भ्रू, युगल, कुटिल कुन्तल घने,

नील नलिन से नेत्र चपल मद से भरे

अरुण राग रंजित कोमल हिम खण्ड से

सुन्दर गोल कपोल, सुढ़र नासा बनी।''[vi]

स्वातंत्र्य चेतना छाचावाद की केन्द्रीय प्रवृत्ति है। उस युग के राजनीतिक परिदृश्य को देखकर पता चलता है कि जन-जीवन में तिलक का 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' वाला मंत्र रस बस गया था। जीवन के हर क्षेत्र में वह भावना क्रांति के स्तर पर क्रियाशील थी। साहित्य जगत में उसका विन्यास रचना के हर स्तर पर प्रत्येक रचनाकार ने अपने-अपने ढंग से किया। छायावादी कवि भी स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे थे। वे खुद अपने रीतिकालीन संस्कारों से मुक्त होने के लिए संघर्षरत थे। उनके काव्य में श्रृंगार के अनेक ऐसे चित्र हैं जो रीतिकालीन कवियों के श्रृंगार का पूर्णतः बहिष्कार न तो जीवन में और न ही कविता में संभव है। छायावाद में श्रृंगार चित्रण कम नहीं है लेकिन उसे रीतिकालीन श्रृंगार नहीं कहा जा सकता है। रीतिकालीन श्रृंगार रीतिकाल की मूल प्रवृत्ति है और छायावादी सूक्ष्मगार चेतना को रचनात्मक स्तर पर उतारने का एक अभियान है। कहना न होगा कि प्रसाद उस अभियान के अग्रणी हैं। 'झरना' की विविध कविताओं में प्रेम के विविध रूपों की बुनियाद रखने वाले प्रसाद ने आँसू' में आकर प्रेम को अत्यनत उदात्त और अविस्मरणी रूप दे दिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हृदय की मुक्तावस्था को रसदशा कहा है। वह रसदशा वास्तव में प्रेम दशा है। वह दशा भाव-साधना से उपलब्ध होती है। वह अपने आप में एक कविता भी है, काव्य सृजन का हेतु और लक्ष्य भी। सौन्दर्य प्रेम का मूलधार है। प्रसाद सौन्दर्य को चेतना का उज्ज्वल वरदान मानते हैं। जहाँ सौन्दर्य का आधार इतना उन्नत और पावन है वहाँ प्रेम अनिर्वचनीय, सूक्ष्म और केवल अनुभूति का ही विषय हो सकता है। उसकी अभिव्यक्ति कविता के रूप में ही हो सकती है। प्रसाद के प्रेम काव्य में श्रृंगार के चित्र स्मृति बिम्बों के रूप में उभरे हैं। संयोगावस्था में कोमल भावनाओं को जीवन की अनेक लुभावनी-गलियों से गुजरने का अवसर प्राप्त होता है। उस अवस्था में प्रेम का स्थूल हो जाना स्वाभाविक है। 'आँसू' प्रेमकाव्य का कालजयी दस्तावेज है। वह एक मार्मिक आत्मनिरीक्षण और परीक्षण का काव्य है। कवि के शुष्क क्षणों में जो हरियाली बनकर आया था वह साधारण व्यक्तित्व का मालिक नहीं प्रतीत होता है। कवि के जीवन की सूखी फुलवारी में पतझड़ था, गोधूली थी वैसे समय में-

''शशि मुख पर घूँघट डाले

अँचल में दीप छिपाये

जीवन की गोधूली में

कौतूहल से तुम आये।''[vii]

प्रिय के साथ मिलन के जो क्षण गुजरे उनका मादक वर्णन करते हुए कवि कहता है-

''परिरम्भ कुम्भ की मदिरा, निश्वास मलय के झोंके

मुख चन्द्र चाँदनी जल में मैं उठता था मुँह-धोके

थक जाती थी सुख रजनी मुख चन्द्र अंक में होता

श्रम सीकर सदृश रखत से अम्बर पट भींगा होता।''[viii]

असीम अम्बर के अन्तस की तरह चमक इन्द्रधनुषी आभा जैसा प्रभाव छोड़ने वाला प्रेम कितना शक्तिशाली हो सकता है यह समझने के लिए 'आँसू' के प्रेम गीत को प्रसाद की काव्यदृष्टि से देखना चाहिए। सच्चे कवि की काव्य-दष्टि और जीवन दृष्टि में बहुत ज्यादा फर्क नहीं होता है। बल्कि यों कहें कि उसकी जीवन दृष्टि ही काव्य-दृष्टि बन जाती है। यहाँ यह विचार कर लेना भी आवश्यक है कि 'आँसू' का आलम्बर कौन है? आँसू के प्रथम संस्करण में वह हाड़मांस की बनी, सौंदर्य की कोई देवी है, लेकिन द्वितीय संस्करण में उसको अलौकिकता के आवरण से ढकने की कोशिश की गई है। वह अपनी अस्पष्टता के कारण अलौकिक भी प्रतीत होने लगता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उसी को लक्ष्य करके कहा था कि आंसू में जहां प्रेम मादकता की बेसुधी में प्रियतम नीचे से ऊपर आते और 'संज्ञा की दशा में चले जाते हैं', वहाँ हृदय की तरंगे उस अनन्तर कोने को नहलाने लगती हैं, जहाँ आंसू उस अज्ञात प्रियतम के लिए बहते जान पड़ते हैं। [ix] अनेक समीक्षकों ने आँसू के प्रिय को आध्यात्मिक शक्ति से जोड़ने का प्रयास किया है। आँसू एक ऐसी उत्कृष्ट रचना है जिसमें व्यापकता और गंभीरता है। इसीलिए उसमें कई तरह के तत्व दिखाई देते हैं। आँसू अपने विधान में लौकिक है और लक्ष्य में अलौकिक। वह जीवन का गीत है। उसकी महत्ता वियोग के नकारात्मक क्षण को सकारात्मक बनाने में है। वह कुंठा, अवसाद, चिन्ता और पलायन को जागरण में तब्दील करने की महत्त्वाकांक्षा का काव्य है। आँसू में प्रसाद कहते भी हैं-

''आँसू वर्षा से सिंचकर

दोनों ही कूल हरा हो

उस शरद प्रसन्न नदी में

जीवन द्रव अमल भरा हो।''[x]

कवि जीवन को जिन आंखों से देखता है उसे कवि का दर्शन कहते हैं। वह शास्त्रीय दार्शनिक सिद्धांतों से भिन्न व्यावहारिक जीवन दर्शन होता है। वह अनुभूति की सच्चाई पर आधृत होने के कारण शास्त्रीय जटिलता से दूर होता है। आँसू का दर्शन वेदना का दर्शन है वह दर्शन जीवन को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों के समन्वित रूप में देखने की प्रेरणा देता है। सुख और दुःख दोनों जीवन के अनिवार्य पहलू हैं। कवि संयोग के क्षणों में भी सुख और दुख दोनों का अस्तित्व महसूस करने की बात स्वीकारता है-

''लिपटे सोते थे मन में

सुख दुःख दोनों ही ऐसे

चन्द्रिका अंधेरी मिलती

मालती कुंज में जैसे।''[xi]

कवि जीवन का सरल समाधान प्रस्तुत करते हुए कहता है-

''मानव जीवन वेदी पर, परिचय हो विरह मिलन का सुख

दुःख दोनों नाचेंगे, है खेल आंख का मन का।''[xii]

सुख की आसक्ति जीवन सरिता को सुखे रेत में बदल देती है। दुःख से विरक्ति जीवन का जूझारूपन छीन कर जीवन को निराशा के अंधेरे में ढकेल कर उसे पलायनवादी बना देती है। इसीलिए कवि ने रचनात्मक स्तर पर अपनी आत्मनिष्ठता को निर्वैक्तिकता के धरातल पर प्रतिष्ठापित करते हुए आँसू के अंतिम छंद में अत्यनत आत्मीय शैली में आँसू को संबोधित करते हुए कहा है-

''सबका निचोड़ लेकर तुम

सुख के सूखे जीवन में

बरसो प्रभात हिमकन सा

आँसू इस विश्व सदन में।''[xiii]

आँसू में प्रसाद ने व्यक्तिगत वेदना को विश्वव्यापी बतलाकर यह निष्कर्ष दे दिया है कि इस भौतिक जीवन में कहीं भी न तो सुख है न विश्राम है। चारों ओर आह और कराह की ध्वनियाँ सुनाई देती रहती हैं। सुख को स्वप्न बन गया है। प्रसाद के ही शब्दों में कहें तो ''सुख आहत शांत उमंगें बेगार सांस ढोने में।''[xiv] प्रसाद ने यह भी कहा है कि वेदना से ही आनंद की प्राप्ति होती है। निराशा सत्य नहीं, उससे

निकल आशा के संसार में चलना है। कामायनी में भी उन्होंने लिखा है-''दुःख की पिछली रजनीबीच, विकसता सुख का नवल प्रभात।''[xv]

यह कहा जा सकता है कि आँसू में मानवीय वेदना का मनोवैज्ञानिक ढंग से क्रमिक निरुपण हुआ है। आँसू से शीघ्र साधारणीकृत होने की वजह उसकी अभिनव अभिव्यंजना प्रणाली है। प्रसाद का संपूर्ण साहित्य मानवतावाद तथा विश्वमंगल और लोक कल्याण की भावना से परिपूर्ण है। 'आँसू' में भी प्रसाद व्यक्तिगत वेदना को विश्व वेदना से एकमेक करके अंत में आँसू को विश्वमंडल की भावना के साथ सम्बद्ध कर देते हैं। इस विश्व सदन में प्रभात के हिमकरण के समान बरसे और इस सूखे जीवन को हरा-भरा बना दे।

आँसू मानवीय विरह का काव्य होते हुए और प्रसाद के जीवन की अन्यतम घटना से विश्रृंखलित होकर भी, भावनाओं के असाधारण उद्वेग और प्रगाढ़ अनुभूति में दार्शनिक चिंतन का योग उसे मार्मिक बनाकर रचनात्मक संतुलन प्रदान करता है, जिसे 'नंद दुलारे वाजपेयी' ने 'दर्शन शासित प्रेम प्रगीत' कहा है।[xvi] इसकी उत्कृष्ट भावभूमि ने निराशा, दैन्य और विषाद को समाप्त कर आस्था और दृढ़ता, विश्वास और मानसिक शांति प्रदान की। 'वास्तविक प्रयोगशाला का अविष्कार'[xvii]| होकर भी, इसे वेदना की दिव्य विभूति का, विश्व में मंगलमय प्रभाव का, उसकी छाया में सौन्दर्य और मंगल के संगम का आभास माना गया। प्रेमशंकर ने इसे ही लक्ष्य करके कहा है कि ''स्वस्थ जीवन दर्शन मनुष्य को दुखांत नहीं बनने देता, वह अपनी उदान्तता में मानवतावाद का पोषक बनता है।''[xviii] यही कारण है कि 'आंसू में प्रेम की अभिव्यक्ति' इतने संघटन के साथ अभिव्यक्त है कि सहज में ही साधारणीकृत हो जाता है।''[xix] 'आंसू' की लड़ियों में जीवन के प्रेम को पिरोने वाला कवि जीवन सागर में उठने वाली लोल लहरों से भी आत्म साक्षात्कार करता है।

'लहर' संग्रह की पहली कविता लहर शीर्षक से लिखी गयी है, जो एक बिंबात्मक प्रतीक है। इसमें न सिर्फ प्रसाद की काव्य चेतना बल्कि समग्र छायावादी काव्य चेतना का अर्थ निचुड़ कर सारभूत हुआ है। 'आंसू' का वेदना दर्शन लहर में करूणा दर्शन बन गया है। वेदना दर्शन आत्मगत होता है, करुणा दर्शन समष्टिगत। 'आँसू' का आत्मनिष्ठ कवि वेदना की निजी अनुभूति को रचनात्मक बनाकर 'विश्व-सदन' को प्रभात के आलोक से आलोकित करने के लिए प्रयत्नशील है। लहर की कविताओं में वह अपने प्रेम को संसार में प्रसारित करता है। जिस कवि में आँसू को लोकमंगल की महिमा से मंडित किया हो, वह करुणा की लहर को भला लोकाश्रय से कैसे वंचित रख सकता है।

'लहर' संग्रह की आत्मपरक कविताओं में प्रेम की अनुभूतियों की 'लघु-लघु लोल लहरियाँ' ही है। आँसू की तरह झंझा, झकोर गर्जन तर्जन नहीं है। आँसू में कवि प्रेम को समझने के क्रम में विविध आंतरिक वाह्य संघर्षों से गुजरना पड़ा है, लहर में वह प्रेम को आत्मसात कर चुका है। आँसू में कवि

एकान्तिकता के जिस संत्रास को झेलने से रह-रहकर घबरा उठता था यहाँ वहीं ऐकान्तिकता उसे काम्य है। आँसू में उसने अपने मन रूपी नाविक को संबोधित किया था-

''नाविक इस सूने तट पर, किन लहरों में खे लाया

इस बीहड़ बेला में क्या, अब तक था कोई आया।''[xx]

'लहर' में वही कवि उसी नाविक से निवेदन करता है-

''ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे

जिस निर्जन में सागर लहरी

अंबर के कानों में गहरी

निश्च्छल प्रेम कथा कहती हो

तज कोलाहल की अवनी रे।''[xxi]

'आँसू' वेदना की अनुभूति का परिणाम है और लहर करुणा की अनुभूति का। इसीलिए प्रकारान्तर से आँसू और लहर की काव्य भूमि-प्रायः एक ही है। पहली जीवन को समझने की प्रक्रिया है और दूसरी जीवन को समझने की दृष्टि प्रक्रिया से ही दृष्टि प्राप्त है। यही कारण है कि लहर की आत्मपरक रचनाओं का आत्म प्रसार बड़ी सहजता से समाष्टि की परिधि में समा जाता है। 'लहर' संग्रह की आत्मकथा कविता में कवि कहता है-''इस गंभीर अनन्तर नीलिमा में असंख्य जीवन इतिहास।''[xxii]

प्रसाद की आत्मपरक कविताएँ उन्हीं अनन्त कथाओं में से एक है, जिन्हें उन्होंने अपनी 'भोली आत्मकथा' कहा है। उस प्रेम कथा की पावनता को सरलता का नाम देकर उसे उज्ज्वल गाथा कहने वाले कवि की संयोग लालसा में मानस जलाधि जैसा गांभीर्य और क्षितिज जैसी उदारता और व्यापकता है। कवि कहता है-

''उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।

अरे खिलखिला कर हंसते होने वाली उन बातों की।''[xxiii]

'लहर' की कविताओं में कवि आँसू काल को एक बार फिर जी लेना चाहता है, लेकिन अत्यन्त शालीन, संयत और विवेकपूर्ण भावुकता के यहाँ उसकी आत्मीयतापूर्ण संबोधन शैली के आत्मपरक गीतों की निश्च्छलता उसे समष्टि में समा जाने के लिए संबल प्रदान करती है। चाहें कवि 'सोई हुई आली को जगा रहा हो[xxiv] या 'अरुण नील सागर संगम'[xxv] को संबोधित कर रहा हो या फिर अपने 'अधीर

यौवन' की समीक्षा कर रहा हो सर्वत्र वह आत्म को पर में विसर्जित करने की ललक लिए हुए है। इन कविताओं के कवि यादों के झरोखे से उन दिनों को अपनी स्मृतियों में साकार करता है-

''वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे?

जब सावन-धन सघन-बरसते

इन आंखों की छाया भर थे।''[xxvi]

कवि उन स्मृतियों को अपनी आंखों की पुतली में प्राण की तरह समा जाने के लिए कहता है-

''मेरी आँखों की पुतली में

तू बनकर प्राण समा जा रे!''[xxvii]

अंत में कवि पवित्र इच्छा व्यक्त करते हुए कहता है-

''स्नेहालिंगन की लतिकाओं की झुरमुट छा जाने दो।

जीवन धर्म! इस जले जगत को वृन्दावन बन जाने दो।''[xxviii]

कवि की प्रेम साधना और काव्य-साधना का फर्क 'लहर' संग्रह की मुझको मिला रे कभी प्यार' शीर्षक कविता में आकर मिट जाता है। उस बिन्दु पर एक तरफ कवि की आत्मगत चेतना है और दूसरी तरफ उसकी काव्य चेतना। झरना, आँसू और लहर की प्रेम परक आत्मनिष्ठ कविताएँ कल्पनाशीलता और अनुभूतिपरकता के एक ही डोर से बंधी है। एक रचना दूसरी की पृष्ठभूमि भी है, प्रेरणा भी है और परिणाम भी। समग्रतः उन रचनाओं के गर्भ में 'कामायनी' अपनाप अस्तित्व ग्रहण कर रही है। एक तरह से सभी पूर्ववर्ती रचनाएं कामायनी की रचनाभूमि की तलाश का प्रयत्न कही जा सकती है। प्रसाद की पूर्ववर्ती रचनाओं में 'स्व' की अभिव्यक्ति समष्टि में समाहित करने की प्रक्रिया है।

संदर्भ

[i] नंद दुलारे वाजपेयी , जयशंकर प्रसाद
[ii] सत्यप्रकाश मिश्र (संपा) प्रसाद का संपूर्ण काव्य ,पृष्ठ.232
[iii] वही ,पृष्ठ.234
[iv] जयशंकर प्रसाद ,झरना ,पृष्ठ – 37
[v] वही ,पृष्ठ .46
[vi] सत्यप्रकाश मिश्र (संपा) प्रसाद का संपूर्ण काव्य ,पृष्ठ- 238
[vii] जयशंकर प्रसाद, आसूं ,पृष्ठ.15
[viii] वही , पृष्ठ .23

[ix] शंभुनाथ (सं) समकालीन सृजन पत्रिका,(जयशंकर प्रसाद (लेख) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल),पृष्ठ.28
[x] जयशंकर प्रसाद ,आंसू ,पृष्ठ.67
[xi] वही पृष्ठ . 44
[xii] वही ,पृष्ठ.44
[xiii] वही ,पृष्ठ .42
[xiv] वही पृष्ठ .8
[xv] जयशंकर प्रसाद ,कामायनी ,पृष्ठ .69
[xvi] नन्ददुलारे वाजपेयी ,जयशंकर प्रसाद ,पृष्ठ .69
[xvii] डॉ. रमेशचंद्र शाह ,जयशंकर प्रसाद ,पृष्ठ .28
[xviii] वही पृष्ठ .9
[xix] डॉ .प्रेमशंकर ,प्रसाद का काव्य ,पृष्ठ .24
[xx] वही पृष्ठ 231
[xxi] डॉ .सत्यप्रकाश मिश्र (सं) प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य ,पृष्ठ.340
[xxii] वही ,पृष्ठ .337
[xxiii] वही पृष्ठ 337
[xxiv] वही ,पृष्ठ 345
[xxv] वही ,पृष्ठ .341
[xxvi] वही पृष्ठ .347
[xxvii] वही पृष्ठ .३५४
[xxviii] वही पृष्ठ .355